अनजाने नायकः वह क्या है जो उन्हें अनूठा बनाता है?

23

अनंत गंगोला



वह क्या है जो कुछ शिक्षकों को अन्य शिक्षकों की तुलना में अनूठा बना देता है? इस प्रश्न के आते ही किसी भी व्यक्ति के दिमाग की गहराई में अनेक शिक्षकों की छवियाँ उभरती हैं। मैंने भी ऐसे शिक्षकों की छवियों और उनके कामों का विश्लेषण करना शुरू किया। मेरी कहानी के नायक कोई और नहीं बल्कि दूर दराज के गाँवों के सरकारी स्कूलों में कार्यरत शिक्षक हैं। शहरी या निजी स्कूलों के शिक्षकों के प्रति मेरा कोई पूर्वाग्रह नहीं है। यह बस एक इत्तफाक है कि पिछले 15–20 सालों के दौरान मुझे ज्यादातर ग्रामीण क्षेत्रों के सरकारी प्राथमिक स्कूलों के साथ काम करने के मौके मिले हैं।

मेरे पहले नायक हैं महेश औद, जो मध्यप्रदेश के कैम्प नं. 4 नामक छोटे से गाँव के एक वैकल्पिक स्कूल में शिक्षक हैं। मुझे बहुत अच्छे से याद है जब मैं पहली बार उस स्कूल में गया था। स्कूल के सभी बच्चों ने अपनी स्लेटों और कापियों के साथ मुझे घेर लिया और कहने लगे, ''मास्टर जी हमें सवाल दीजिए''। मैं उन्हें एक के बाद एक सवाल देता रहा, लेकिन वे जोड़, घटाने, गुणन और भाग के और सवाल माँगते ही रहे। वे बिजली की गति से सवाल हल कर रहे थे – इतनी तेजी से कि मेरे उन्हें पूरे सवाल दे पाने के पहले ही कोई बच्चा उत्तरों के साथ मेरे पास भागता हुआ आ जाता था। बच्चे तो उकता ही नहीं रहे थे लेकिन कुछ देर के बाद मैं जरूर थका हुआ महसूस करने लगा। यह अनुभव मेरे दिमाग में अभी भी ताजा है। अब तक, हो सकता है कि आप यह सोचने लगे हों कि क्यों मैं सिर्फ बच्चों की ही बातें कर रहा हूँ जबकि असल में तो मैं शिक्षक का वर्णन करना चाहता हूँ। मैं ऐसा इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि मैं शिष्यों की आँखों में उनके गुरु को देख सकता था।

इस स्कूल की घटनाएँ असाधारण थीं और मैं जिन भी स्कूलों में इससे पहले गया था वहाँ से एकदम भिन्न थीं। इसीलिए महेश मेरे पहले नायक हैं, वह शिक्षक जो एक असाधारण काम कर रहे हैं। मैं आपको इनकी कुछ सहज लेकिन बेहद महत्वपूर्ण विशेषताओं के बारे में बताना चाहूँगा। महेश का प्रत्येक बच्चे को एक सम्पूर्ण अलग व्यक्तित्व के रूप में स्वीकार करना बिलकुल अनोखी और अनसुनी बात थी। महेश हर बच्चे पर ध्यान देने और उसके साथ गैर–शैक्षणिक वार्तालाप करने की फिकर कर रहे थे। इसके कुछ उदाहरण हैं

''शोभा, तुम्हारा बछड़ा कैसा है?''
''सुनील, क्या तुम्हारे मामा लौट आए?''
''रेखा, आज तुम्हारे बाल किसने बनाए हैं?''

इस तरह की अनौपचारिक बातचीत बच्चों को बहुत सहज बना दे रही थी। इसलिए वहाँ का माहौल बिलकुल ही भयमुक्त था। महेश बच्चों को एक समूह के रूप में नहीं देखते थे। हर बार वे हरेक बच्चे के साथ अलग से काम करने का समय निकाल लेते थे और उन्हें उनके नामों से बुलाते थे। कभी भी किसी को भी 'ए लड़के' या 'ए लड़की' कहकर नहीं पुकारते थे। मुझे लगता है कि यह एक ऐसा महत्वपूर्ण गुण था जिसने बच्चों के बीच उनकी स्वीकार्यता में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

उनके पढ़ाने के ढंग के बारे में जो अन्य खास बात मुझे अच्छी लगी वह यह थी कि महेश ने कभी भी खुद को अकेला सन्दर्भ व्यक्ति नहीं समझा। जैसे कि एक बच्चा उनके पास कोई सवाल लेकर आया तो उसे स्वयं हल कर देने के बजाय बच्चे को सीमा (एक अन्य बच्ची) के पास भेज दिया और उसके साथ मिलकर सवाल हल करने के लिए बच्चे को प्रेरित किया। ऐसा प्रतीत होता था कि उन्हें कभी भी सवाल का जवाब खुद देने की जल्दी नहीं थी बल्कि वे धैर्यपूर्वक बच्चे को उसे हल करने की कोई कार्यविधि सुझाते ताकि बच्चा या तो खुद ही हल तक पहुँच जाए या फिर किसी अन्य साथी की मदद ले ले। वहाँ बना–बनाया जैसा कुछ उपलब्ध नहीं था और इससे बच्चे हमेशा किसी न किसी चीज के साथ व्यस्त रहते थे। यह व्यवस्था बच्चों को खुद से सीखने का मौका प्रदान कर रही थी; इससे बच्चों को अपनी ऊर्जा का इस्तेमाल करने में मदद मिल रही थी और हर बार किसी सवाल को हल कर लेने पर वे आनन्द और कुछ खोज लेने की भावना का पूरी तरह से मजा ले रहे थे।

''वे हरेक बच्चे के साथ अलग से काम करने का समय निकाल लेते थे और उन्हें उनके नामों से बुलाते थे। कभी भी किसी को भी 'ए लड़के' या 'ए लड़की' कहकर नहीं पुकारते थे। मुझे लगता है कि यह एक ऐसा महत्वपूर्ण गुण था जिसने बच्चों के बीच उनकी स्वीकार्यता में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।''

असाधारण शिक्षकों की शृंखला में अगली हैं सरस्वती। सरस्वती के स्कूल का परिदृश्य महेश के स्कूल से अलग था। वहाँ हर चीज बड़ी व्यवस्थित प्रतीत हो रही थी। बच्चे 5 या 6 के छोटे–छोटे समूहों में बैठे देखे जा सकते थे। सरस्वती के पास सभी समूहों के लिए दिन की कार्ययोजना थी। दिन की शुरुआत में सरस्वती ने बच्चों को अपने–अपने समूहों के साथ बिठवाया और बारी–बारी से उन्हें काम बाँटे। प्रत्येक समूह को एक अलग कार्य दिया गया। कामों को बाँटे जाने के बाद वे एक–एक करके हर समूह के पास गईं और उन्हें अपना काम शुरू करने में मदद की। हर चीज की योजना उन्होंने पहले से ही बना ली थी – प्रत्येक समूह कहाँ बैठेगा, इत्यादि। कुछ समूह स्कूल भवन के अन्दर बैठे थे, वहीं बाकी बाहर खुले मैदान में। इसके बावजूद कहीं कोई अस्तव्यस्तता नजर नहीं आ रही थी।

काम देने और उनका मूल्यांकन करने का कार्य खुद बच्चों द्वारा आपस में किया जा रहा था। सरस्वती एक शिक्षिका नहीं बल्कि एक बड़ी बच्ची की भाँति लग रही थीं। एक समूह किसी पेड़ के विभिन्न अंगों पर काम कर रहा था। सरस्वती ने इसके बारे में किसी किताब में से पढ़ाकर या कोई रेखाचित्र बनाकर बच्चों को नहीं समझाया बल्कि बच्चों से एक पौधे को उखड़वाकर उनसे जड़ों, तनों, डालियों, और पत्तियों के बारे में चर्चा की। इसके बाद बच्चों से अपनी कॉपियों में पेड़ के विभिन्न भागों के रेखाचित्र बनाने को कहा। फिर सरस्वती ने बच्चों को किताब के एक अध्याय में से पेड़ के विभिन्न भागों के बारे में समझाया। वह बच्चों को जो भी पढ़ा रही थीं उसके हरेक शब्द का अर्थ उन्हें पता था और उसका यही गुण उन्हें बाकी सब से अनूठा बनाता है।

मेरे अगले नायक हैं रमेश जो कि इकलौते शिक्षक वाले स्कूल के अकेले शिक्षक हैं। उनका स्कूल उत्तराखण्ड राज्य के उत्तरकाशी जिले के सुदूरवर्ती 'मोरी ब्लॉक' में स्थित है। जब बात उनके विद्यार्थियों की आती है तो रमेश संवेदनशीलता का प्रतिमान हैं। उनका असाधारण धीरज और बच्चों की बात सुनने के लिए इच्छुक होना उन्हें बाकी सबसे अलग करता है। बच्चों द्वारा अपने अनगिनत सवालातों के साथ उन्हें घेर लेने के बावजूद रमेश उन सभी की बात बड़े ध्यान से सुनते और प्रत्येक बच्चे को उपयुक्त ढंग से जवाब देते। कक्षा के संचालन के मामले से जुड़े फैसले लेने में उनका तरीका लोकतांत्रिक था। उनकी कक्षा में कार्य कभी भी औपचारिकता के लिए नहीं दिए जाते थे। बल्कि वे अपनी कक्षाओं की गतिविधियों की योजना बच्चों के साथ मिलकर ही बनाते थे। मैं इस स्कूल को सही अर्थों में 'बच्चों का स्कूल' कह सकता हूँ जहाँ हर बच्चा निर्णय प्रक्रिया में शामिल रहता है।

रमेश की असाधारण प्रतिभा थी बच्चों के निर्णयों के मुताबिक अपने अध्यापन को ढाल लेने की अद्‌भुत क्षमता। एक शिक्षक के तौर पर वह आत्मविश्वास से लबरेज हैं और अपने विषय पर उनकी मजबूत पकड़ है।

> *''वे बच्चों को जो भी पढ़ा रही थीं उसके हरेक शब्द का अर्थ उन्हें पता था और उनका यही गुण उन्हें बाकी सब से अनूठा बनाता है।''*

इसके साथ ही वे परिस्थिति की माँग के मुताबिक नवीनता लाने में भी सक्षम हैं और उनकी यही बात उन्हें उनके साथियों से जुदा बनाती है।

इन स्कूलों में, जहाँ मेरे ये नायक पढ़ा रहे थे, बच्चों को पढ़ाने के तरीकों में व्यापक अन्तर था। जब हमने उनके बीच कुछ बुनियादी समानताएँ ढूँढने की कोशिश की तो हमें ये बातें समझ में आईं। बच्चों के प्रति उचित सम्मान का होना, पढ़ने–पढ़ाने की प्रक्रिया में बच्चों को शामिल करना, और इस तरह उन्हें निष्क्रिय विद्यार्थी की बजाय सक्रिय भागीदार बनाना, बच्चों को प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करना, बच्चों को अपने भावों को अभिव्यक्त करने की स्वतंत्रता देना और लोकतांत्रिक मूल्य अपनाना आदि। ऐसे स्कूलों में शिक्षा कोई यांत्रिक प्रक्रिया नहीं बल्कि जाहिर तौर पर ऊर्जावान सक्रिय होती है जो कि दिलचस्प गतिविधियों से जीवन्त बनी रहती है।

इसके अलावा, इन शिक्षकों के बीच एक सुस्पष्ट समानता है। इस लेख में उल्लेखित तीनों शिक्षक खुद को 'विद्वान' शिक्षक नहीं समझते बल्कि उनका मानना था कि वे 'सीख रहे शिक्षक' हैं। कुछ नया सीखने की भूख और प्रेरणा उनके भीतर खासी जीवित है। इसके चलते, वे लगातार अध्ययनरत रहते हैं और उनके भीतर रोज कुछ न कुछ नया सीखने की लालसा रहती है। अतः ऐसे शिक्षकों के कौशल पर एक निश्चित समय गुजर जाने के बाद भी जंग लग जाने का डर नहीं रहता।

अनंत गंगोला *अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन, उत्तराखण्ड के राज्य प्रमुख हैं। उन्होंने इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज़ से एम. फिल. किया है। उदयपुर से फ्यूचरोलॉजी पर एक कोर्स भी किया है। उन्होंने नीलगढ़, मध्यप्रदेश में स्थानीय जनजातीय समुदाय के बीच साक्षरता और सामाजिक उत्थान के लिए काम किया है। वे मध्यप्रदेश के रायसेन जिले में जिला परियोजना अधिकारी (डीपीओ) भी रहे हैं। उनके प्रयासों के लिए राज्य सरकार द्वारा उन्हें सम्मानित किया गया है। युनाइटेड नेशन्स लीडरशिप एकैडमी द्वारा जॉर्डन में फैलोशिप द्वारा सम्मानित हो चुके अनंत को प्रो. रमेश चंद्र भट्ट फैलोशिप भी प्राप्त हुई है। उन्होंने जोहैनेसबर्ग, दक्षिण अफ्रीका में आयोजित अर्थ समिट में भारत का प्रतिनिधित्व किया था। उनसे इस* anant@azimpremjifoundation.org *ईमेल पते पर सम्पर्क किया जा सकता है।*

तर्क–गणित की दिमागी कसरतें

मेज पर तीन पात्र रखे हुए हैं, एक पात्र 800 मिलीलीटर का है और सेब के रस से पूरा भरा है। अन्य पात्र क्रमशः 500 मिली और 300 मिली के हैं। राजदीप किसी पाक–विधि के लिए ठीक 400 मिली सेब का रस मापना चाहता है। इस प्रश्न को हल करने में आप राजदीप की किस तरह से मदद कर सकते हैं?

इस स्थान का उपयोग गणना हेतु करें। 🙂